सुगम संगीत की विधाओं गीत, ग़ज़ल एवं नज़्म का विश्लेषणात्मक अध्ययन

गुरु नानक देव विश्वविद्यालय (अमृतसर) के तत्वावधान के अंतर्गत हंसराज महिला महा विद्यालय (जालंधर) के गायन-संगीत विभाग में एम. ए. की उपाधि के लिए प्रस्तुत लघु शोध परियोजना

निर्देशक, निरीक्षक

डॉ प्रेम सागर ग्रोवर,श्रीमती राधिका सोनी

शोधार्थी

हनु

गायन संगीत विभाग
हंसराज महिला महा विद्यालय
जालंधर
2022

प्रमाण पत्र

यह प्रमाणित किया जाता है कि हनु ने प्रस्तुत लघु शोध परियोजना "सुगम संगीत की विधाओं गीत, ग़ज़ल एवं नज़्म का विश्लेषणात्मक अध्ययन" लगन एवं परिश्रम से संपन्न किया है। ऐसा करते हुए शोधार्थी ने शोध प्रक्रिया की तकनीकों को आत्मसात करने का भरसक प्रयास किया है। पाठ्यक्रम के निर्देशानुसार शोधार्थी ने विषय का चयन करते हुए शोध प्रक्रिया का सन्तोषजनक निर्वाहण किया है।

निर्देशक के हस्ताक्षर

निरीक्षक के हस्ताक्षर

घोषणा पत्र

मैं हनु एम. ए. समैस्टर 4 की छात्रा घोषणा करती हूँ कि मैंने यह लघु शोध परियोजना अपनी मेहनत तथा लगन के साथ पूर्ण की है। मेरे इस शोध कार्य के निर्देशक डॉ. प्रेम सागर तथा निरीक्षक श्रीमती राधिका सोनी के कुशल मार्ग दर्शन के अधीन सम्पन्न हुई है।

शोधार्थी के हस्ताक्षर

Hanu

शोधार्थी का नाम

हनु

विषय सूची:-

सुगम संगीत की विधाओं गीत, ग़ज़ल एवं नज़्म का विश्लेषणात्मक अध्ययन

प्रथम अध्याय :- सुगम संगीत की परिभाषा एवं ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

1.1 सुगम संगीत की परिभाषा

1.2 सुगम संगीत का उद्भव एवं विकास

1.3 वर्तमान सुगम संगीत का स्वरूप

द्वितीय अध्याय :- शोध प्रविधि

2.1 शोध प्रविधि

2.1.1 अध्ययन का महत्त्व

2.1.2 समस्या कथन

2.1.3 शोध के उद्देश्य

2.1.4 शोध विधि

2.1.5 दत्त संग्रह स्त्रोत

2.1.6 दत्त विश्लेषण

2.1.7 शोध कार्य की सीमाएं

तृतीय अध्याय :- गीत , ग़ज़ल और नज्म का विश्लेषण

3.1 गीत

3.1.1 गीत का साहित्यिक रूप

3.1.2 गीत का सांगीतिक स्वरूप

3.2 ग़ज़ल
3.2.1 ग़ज़ल का साहित्यिक रूप
3.2.2 ग़ज़ल का संगीतिक स्वरूप
3.3 नज़्म
3.3.1 नज़्म का साहित्यक रूप
3.3.2 नज़्म का सांगीतिक स्वरूप

उपसंहार

संदर्भ ग्रंथ सूची

प्रथम अध्याय

सुगम संगीत की परिभाषा एवं उसकी ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

भारतीय संगीत अपनी विशेषताओं के लिए विश्व प्रसिद्ध है। प्राचीन समय से लेकर आज तक इसमें अनेक परिवर्तन आए। इसमें सामाजिक, राजनैतिक बदलावों के साथ-साथ कई सभ्यताओं और संस्कृतियों का मेल भी हुआ। इन घटनाओं ने भारतीय कलाओं को भी प्रभावित किया, तो इन से संगीत भी कैसे अछूता रह सकता था। यही कारण है कि इसमें सदैव नवीनता और विविधता बनी रही जिसके फलस्वरूप आज भारतीय संगीत में संगीत के विभिन्न रूप एवं विविध शैलियाँ प्रचार में हैं। इसमें शास्त्रीय संगीत और लोक संगीत के इलावा संगीत के अन्य प्रकार भी प्रचलित हैं जिनमें उपशास्त्रीय संगीत, भक्ति संगीत, सूफ़ी संगीत, गुरमत संगीत, रवींद्र संगीत और सुगम संगीत जिसे कुछ लोग "भाव संगीत" भी कहते हैं।

20वीं शताब्दी में सुगम संगीत ने भारतीय जनमानस को विशेष रूप से प्रभावित किया है।गीत, ग़ज़ल, नज़्म और भजन आदि गायन शैलियों को सुगम संगीत के प्रमुख गायन शैलियाँ माना जाता है। इसके अलावा चलचित्रों में प्रयोग किये गए पार्श्व संगीत को भी सुगम संगीत के अंतर्गत ही मानना उचित होगा।वर्तमान सुगम संगीत को जानने के लिए ज़रूरी है कि इसके अतीत में झांकने का प्रयास किया जाए, ताकि वर्तमान सुगम संगीत के स्वरूप को बेहतर तरीक़े से जाना जा सके।

1.1 सुगम संगीत की परिभाषा:-

सुगम शब्द दो शब्दों के जोड़ से बना है 'सु' + 'गम', 'सु' का अर्थ है सहजता और 'गम' का अर्थ यह पहुँचना अर्थात जहाँ पर सहजता से पहुँचा जा सके और समझा जासके। इस नाते सुगम संगीत का दायरा बहुत विस्तृत हो जाता है। जिस संगीत को हम सहजता से समझ पाएँ उसका आनंद ले पाएँ उसे सुगम संगीत कहना उचित लगता है। हाँ,ये बात ज़रूर है कि सुगम संगीत को गाना बहुत साधना की अपेक्षा रखता है। जितना समझना आसान है,सुनना आसान है उतना ही उसकी रचना करना,अथवा उसे अच्छी तरह से गा ,बजा कर निभा पाना दुर्गम है।

उदाहरण के लिए:-
लता जी द्वारा गाए गए गीत को सुन कर समझने वाले और आनंद लेने वाले लाखों श्रोता हो सकते हैं, परंतु उनकी रचनाओं को सांगीतिक और काव्यात्मक सौंदर्य की रक्षा करते हुए निभा पाना, किसी विरले प्रतिभावान साधक के हिस्से में ही आता है। इस कथन से सुगम संगीत के अर्थ और उसकी समृद्धता को समझने में सहायता मिल सकती है।

सुगम संगीत भारतीय विधा का एक अंग है। "वे संगीत जिसमें जिसे सहजता से सीखा और गाया बजाया जा सके,जिसे निश्चित नियमों में बाँधा नहीं गया है, जो लोक में प्रिय है, सुगम संगीत कहलाता है। लोग गीत,लोक प्रिय संगीत, भजन, फ़िल्मी गीत आदि इसी श्रेणी में आते हैं।"-[1]

"Sugam Sangeet is one such form of music which combines classicism and modernity in right balance. Not constrained by the strict disciplinary standards of Hindustani classical music, Sugam sangeet is lyric-based and emanates soft lilting tunes in its rendition maintaining a classical touch."- [2]

1.2. सुगम संगीत का उद्भव एवं विकास

प्राचीन काल :-
इस धरती पर जैसे-जैसे मानव सभ्यता का विकास हुआ वैसे-वैसे मानव ने अपने जीवन को सुखद, सम्पन्न और सुसंस्कृत बनाने के प्रयास आरंभ कर दिए। सदैव कुछ नया खोजने की प्रवृत्ति ने उसे सृष्टि का श्रेष्ठतम प्राणी बना दिया और सृष्टि ने उसे अपने गुप्त और गूढ़ रहस्यों से अवगत करवाया।मनुष्यों की सामूहिक रूप में कार्य करने की प्रकृति के कारण धरती पर कई महान सभ्यताओं और संस्कृतियों का जन्म हुआ।

---

[1] तिवारी डॉ. उमाशंकर, आधुनिक गीत का काव्य,वाणी प्रकाशन, (1997)

[2] https://www.indianholiday.com/gujarat/arts-and-crafts/sugam-sangeet.html

उसने अपने जीवन को सुखद, सम्पन्न, सुसंस्कृत और समृद्ध बनाने के लिए अपना खोज कार्य निरंतर जारी रखा और उसके साथ-साथ आत्मानंद, आत्माभिव्यक्ति और चित्तरंजन के लिए कला को माध्यम बनाया।अपने सूक्ष्म भावों को प्रकट करने के लिए उसने 5 ललित कलाएं विकसित की जो इस प्रकार हैं :-संगीत कला, भवन निर्माण कला, लेखन कला,चित्र कला,मूर्तिकला । इतना ही नहीं उसने कलाओं को नियमबद्ध भी किया और उनके उद्देश्य भी निश्चित किए।

प्राचीन काल से ही मानव अपने मन के भावों को व्यक्त करने के लिए संगीत का सहारा लेता आ रहा है। कभी मन के ज़रिए को विपरीत करने के लिए तो कभी दुखी मन को सही लाने हेतु वह संगीत के सुरों की रसधार में बहता रहा है। संगीत में कभी सामूहिक तो कभी एकल गायन का सहारा लेकर मनुष्य अपनी भावनाओं को व्यक्त करता रहा है। परंतु प्राचीन काल से लेकर आधुनिक काल तक मनुष्य के भावों एवं नाद की उत्पत्ति सर्वप्रथम एकल रूप से मानी गई है,चाहे वो रूप प्रथम नाद का हो या फिर संगीत के भिन्न भिन्न भाव हों। यही एकल रुप अपनी मूल स्थिति से प्रभावित होकर सामूहिक स्थिति ग्रहण कर लेता है जो की सामूहिक गायन कहलाता है।

प्राचीन काल से ही एकल गायन सुगम संगीत के रूप में मंदिरों ,दरबारों ,व्यवस्थाओं ,त्योहारों आदि पर गाया जाता था और यही रूप एक मनुष्य से अनेक मनुष्य तक पहुँचता पहुँचता सामूहिक रूप धारण कर लेता था।इस तरह सुगम संगीत प्राचीन काल से विकसित होता हुआ अनेक पड़ावों से गुज़रकर आधुनिक रूप धारण कर चुका है। इस संदर्भ में कबिलों में गाया जाने वाला सामूहिक लोक संगीत तथा भक्ति संगीत के संदर्भ में सामूहिक मंत्र गान और बीच-बीच में एकल गान को उदाहरण स्वरूप लिया जा सकता है।

मध्य काल :-

मध्य काल का समय 11वीं से 18वीं शताब्दी के लगभग माना जाता है।इस युग में मुसलमान शासकों का भारत में पूरी तरह वर्चस्व बना रहा।इस काल में ईरानी वह अरबी संस्कृति ने भारतीय संस्कृति को प्रभावित किया।इसी काल में
गीत,ग़ज़ल,ख़याल,वाली,द्रुपद,धमाल,पद,कीर्तन,भजन आदि ।

गायन विधाओं का निकास और विकास हुआ।इन गायन शैलियों में साहित्य की विशेष भूमिका रही। ग़ज़ल,गीत,पद आदि विधाएँ तो पूरी तरह साहित्यिक कही जा सकती है जो धीरे-धीरे भारतीय संगीत का हिस्सा बन गई।

"It is believed that qual, Qualbana and Quawali where are the styles or forms of music which developed during the time of Amir Khusru. Who was considered to be an authority on music and a Persian scholar. Although these styles were invented yet they never gained momentum till the 18th century. As a matter of fact the forms Geet, Ghazals, Quawali etc." [3]

उपरोक्त चर्चित गायन शैलियों का अविष्कार अमीर खुसरो ने किया इस विषय पर विद्वानों में मतभेद हो सकते हैं पर इस सत्य को नहीं झुठलाया जा सकता है कि वे कई भाषाओं के ज्ञाता,महान शायर व संगीतज्ञ थे और उन्होंने इन गायन शैलियों को प्रचारित प्रसारित करने में जो योगदान दिया सर्वविदित है।

मध्यकाल में सूफ़ी संत और भक्त कवियों ने जो रचनाएँ की, साहित्य और संगीत के सामंजस्य का अनुपम उदाहरण कही जा सकती है।इन संत कवियों ने अपनी गायकी के माध्यम से अपने विचारों और जीवन दर्शन को जनसाधारण तक पहुँचाया उसी शब्द और स्वर का यही सुमेल आज के सुगम संगीत का आधार है।

---

3 Petievich Carla, Assembly of Rivals (Delhi Lucknow And The Urdu Ghazal), Manohar Publications, New Delhi First ed. 1992

आधुनिक काल:-

संगीत के आधुनिक काल में फिर शब्द और सहित का महत्व बढ़ने लगा और ऐसी गायन शैली या जन साधारण में लोकप्रिय होने लगी, जिनमें संगीत के साथ-साथ काफ़ी को भी विशेष स्थान प्राप्त था। इस प्रकार का अफेयर और संगीत के रसिकों ने अपने लिए नए रास्ते खोजने शुरू कर दिए।

"काव्य ने लोग गीत, ठुमरी, चैती, कजरी, होरी, दादरा, लावनी, कीरतन, भजन और गीत गायन की विधाओं से फिर से संगीत में संपर्क बाँधने की कोशिश की और इसमें काफ़ी सीमा तक सफल भी हुए, यह नितांत सत्य किसी से छुपा नहीं रह सकता।"-

इसी संदर्भ में मोहम्मद रेज़ा काज़मी अपनी विचारधारा को कुछ इस तरह से व्यक्त करते हैं:-

"we can say that during the past 200 years Thumri, Gazal and Geet became popular and took a firm hold in the field of music. Another reason for the popularity of these varieties may be attributed to the cause that being more lyrical they are able to move the emotions of the listener more than the mere notes. The words or poetry plays equally important role in its effect. It will not be out of the way to say a few words about the film music which also develop during the last 50 years or so."-[4]

1.3 वर्तमान सुगम संगीत का स्वरूप:-

वर्तमान सुगम संगीत का स्वरूप अपने आप में विस्तृत रूप है क्योंकि सुगम संगीत में अनेक विधाएँ शामिल हैं, जिनमें से गीत, ग़ज़ल,नज़्म ,भक्ति संगीत तथा लोक संगीत आदि गायन शैलियाँ विशेष महत्व रखती है।गीत,ग़ज़ल एवं नज़्म का प्रयोग सुगम संगीत में भलीभाँति किया जाता है।इन तीनों गायन शैलियों का अपना अपना रंग एवं स्वरूप हैं तथा इन तीनों शैलियों में भाव,रस,प्रेम,व्यंग की पूर्ति भी प्राप्त होती है।हमारे लघु शोध प्रयोजन में इन तीनों विधाओं का वर्णन विस्तारपूर्वक आगे अध्याय में किया जाएगा।सुगम संगीत में जहाँ गीत, ग़ज़ल एवं नज़्म की अपनी एक अहम भूमिका है,उसी के साथ साथ भक्ति संगीत एवं

---

4 Kazimi Muhammad Reza, Culture and Identity Selected English Writings of Faiz, Oxford University, Press - 2005

लोक गीत की विधाएँ भी वर्ण योग्य हैं।भक्ति संगीत गायन शैली अपने नाम से ही व्यक्त कर देती है की इस शैली का संबंध अध्यात्मिकता एवं ईश्वर भक्ति सेहैं। भक्ति संगीत की प्रथा प्राचीन काल से लेकर आधुनिक काल तक सुगम संगीत के रूप में चलती आ रही है। भक्ति संगीत में कलाकार ईश्वर की आराधना भजन,शब्द,मंत्रों के रूप में करता है।भक्त भक्ति संगीत में कलाकार अपने भावों में बहता हुआ बिना किसी संगीत नियमों के अपने गायन को प्रस्तुत करता है। इस संगीत में मन के भावों को स्वतंत्र रूप में प्रस्तुत किया जाता है,और बिना किसी शास्त्रीय नियमों के इस विधा का गायन होता है। यही कारण भक्ति संगीत को सुगम संगीत की श्रेणी में रखता है।

"लाइट म्यूज़िक का आधार मूल शब्द है। आज के लाइट म्यूज़िक में भजन की एक अलग विधा है।यह एक अलग गायन शैली है और हिन्दी कवियों के सुगम गीतों को भी कलाकारों से प्रस्तुति के लिए लाइट म्यूज़िक ने स्वीकृति दी गई है।"-[5]

इस तरह हम देखते हैं की भक्ति संगीत की विधा सुगम संगीत की विधाओं में से 1 है।की भक्ति संगीत की तरह है लोक संगीत का भी सुगम संगीत में अपना 1 अहम स्थान है।लोक संगीत से अभिप्राय लोगों द्वारा, लोगों के लिए,लोगों के मनोरंजन का साधन है।प्रत्येक देश एवं प्रांत का अपना लोक संगीत होता है। लोक संगीत किसी भी देश की सभ्यता,संस्कृति,रहन सहन एवं रीति-रिवाज़ों पें आधारित होता है। सांगितिक विद्वानों के अनुसार किसी भी देश की सभ्यता,संस्कृति का ज्ञान उस देश के लोक संगीत द्वारा लगाया जा सकता है।लोक संगीत का स्वरूप भावपूर्ण एवं सरल होता है। इस संगीत का प्रयोग विवाह शादियों, त्योहारों, रीति रिवाज़ों एवं कामकाज करते समय आसानी से किया जाता है।यही कारण इस संगीत को सुगम संगीत में शामिल कर देता है।

"लोक गीत लोग के गीत हैं।जिन्हें कोई एक व्यक्ति नहीं बल्कि पूरा लोक समाज अपनाता है।सामान्यतः लोक में प्रचलित, लोग द्वारा रचित एवं लोक के लिए लिखे गए गीतों को लोक गीत कहा जाता है। लोक गीतों का रचनाकार अपने व्यक्तित्व को लोग समर्पित कर देता है। शास्त्रीय नियमों की विशेष परवाह न करके सामान्य लोग व्यवहार के उपयोग में लाने के लिए मानव अपने आनंद की इस तरंग में जो छन्दोबद्ध वाणी सहज उद्भूत करता है,वही लोग गीत है।"-[6]

---

[5] प्रकाश पंडित,अख़्तर शीरानी और उनकी शायरी,राजपाल एंड संस,दिल्ली (2000)

6 सम्मेलन पत्रिका ,लोक संस्कृति पृष्ठ-५४

फ़िल्मी में संगीत भी सुगम संगीत का ही एक हिस्सा है बल्कि फ़िल्मी संगीत,सुगम संगीत की गायन विधाओं को सजाने,सँवारने व व लोकप्रिय बनाने में बहुत मददगार साबित हुआ है।यह माना जा सकता है कि पिछले आठ दशकों से हैं जो शब्द रचनाएँ रेडियो,टीवी/TV,चलचित्र,मंचों,महफ़िलों में विभिन्न कलाकारों द्वारा प्रस्तुत होती रही है । उन्हें लाइट म्यूज़िक की श्रेणी में रखा जाता है।इस तरह सुगम संगीत इन सभी संगीत विधाओं के सुमेल से अपने आप में एक विशाल आकृति धारण कर लेता है।अब हम इन विधाओं में से गीत,ग़ज़ल एवं नज़्म का वर्णन करेंगे।

गीत:-

गीत वर्तमान हिन्दी और उर्दू की एक ऐसी विधा है जिससे सुगम संगीत में विशेष महत्व तथा प्राप्त है। गीत का सम्बंध कुछ विद्वान प्राचीन गीति काव्य और भक्ति काल में रचे गए पदों से जोड़कर देखते हैं। वर्तमान साहित्य के गीत प्रेम, श्रृंगार और व्यक्तिगत आंतरिक मनोभावों पर केंद्रित होता है यही कारण है कि सुगम संगीत के लिए यह विधा बहुत उपयोगी रही है। फ़िल्मों और प्राइवेट एल्बम में ऐसे अनेकों गीत मौजूद हैं।

"होंठों से छू लो तुम मेरा गीत अमर कर दो
बन जाओ मीत मेरे, मेरी प्रीत अमर कर दो।"
(फ़िल्म - प्रेम गीत ,गायक - जगजीत सिंह)

"जब सूना-सूना लगे तुम्हें जीवन अपना
तुम मुझे बुलाना मैं गुंजन बन आऊँगा आऊँगा। "
(गीतकार - नीरज, गायक - अशोक खोसला, एल्बम- धनक 2006)

ग़ज़ल:-

ग़ज़ल फारसी साहित्य की एक विधा है जो बाद में उर्दू अरब में आयी।महान संगीतकार और शायर अमीर ख़ुसरो के समय से ये लिखी और गायी जा रही है। वर्तमान सुगम संगीत में फ़िल्मी और ग़ैर फ़िल्मी ग़ज़लें दोनों ही श्रोताओं में लोकप्रिय रही है।

उदाहरण के तौर पर:-

"कभी किसी को मुकम्मल जहाँ नहीं मिलता
कभी ज़मीं तो कभी आसमान नहीं मिलता। "
(शायर - निदा फ़ाज़ली, गायक - भूपेंद्र, एल्बम - आहिस्ता आहिस्ता)

"देख तू दिल के जां से उठता है
ये धुआँ सा कहाँ से उठता है।"
(शायर - मीर तक़ी मीर, गायक - मेहदी हसन, एल्बम - फ़ेस्टिवल ऑफ़ ग़ज़लस वॉल्यूम-2)

नज़्म:-

नज़्मों उर्दू अदब की एक नवीन विधा है, जिससे उर्दू के वर्तमान शायरों ने अपने-अपने अंदाज़ में लिखा है।इसके नियम ग़ज़ल की तरह कठोर नहीं है।इसमें शायर अपनी प्रकृति और सुविधा के मुताबिक़ आज़ादी ले लेता है।उर्दू शायरों की अनेकों नज़्मों को बहुत से गायकों और संगीतकारों ने अपने-अपने ढंग से स्वरबद्ध किया है।फ़िल्मी संगीत में बहुत सी नज़्में गाई गई हैं।इसी तरह ग़ैर फ़िल्मी नज़्में भी सुगम संगीत से श्रोताओं में बहुत मक़बूल हुईं। उदाहरण के लिए:-

"मैं यह सोचकर उसके दर से उठा था
कि वो रोक लेगी ,मना लेगी मुझको।"
(शायर-कैफी आज़मी, गायक-मोहम्मद रफ़ी, फ़िल्म-हक़ीक़त)

"अभी तो मैं जवान हूँ "
(शायर-हफ़ीज़ जालंधरी, गायक-मलिका पुखराज)

द्वितीय अध्याय
शोध प्रविधि

2.1 शोध प्रविधि:-

किसी भी शोध कार्य को सफलतापूर्वक करने के लिए किसी विशेष विधि का प्रयोग किया जाता है। सही शोध विधि ही शोध कार्य को लक्ष्य तक पहुँचाने में मददगार साबित होती है। शोध कार्यों के अनुकूल ही विशेष शोध विधि का प्रयोग करके विश्व से सम्बंधित सामग्री को एकत्रित करके शोध कार्य को संपूर्णता प्रदान की जाती है।

2.1.1 अध्ययन का महत्त्व:-

गीत,ग़ज़ल एवं नज़्म के पारस्परिक अंतर को भली भाँति स्पष्ट करना प्रस्तुत लघु शोध परियोजना के अध्ययन का महत्त्व है।शास्त्रीय संगीत कला की अनेक विधाओं जैसे की ध्रुपद ,धमार, ख़याल, ठुमरी, दादरा आदि के संदर्भ में सुगम संगीत की विधाओं गीत,ग़ज़ल एवं नज़्म का ऐतिहासिक अध्ययन एवं वर्तमान समय में उनकी उपयोगिता का वर्णन भी इस लघु शोध परियोजना का महत्व है।

2.1.2 समस्या कथन:-

सुगम संगीत की विधाओं गीत,ग़ज़ल एवं नज़्म का विश्लेषणात्मक अध्ययन

2.1.3 शोध के उद्देश्य:-

1. गीत, ग़ज़ल एवं नज़्म गायन शैलियों की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि का अध्ययन करना।
2. गीत, ग़ज़ल एवं नज़्म की साहित्यिक रूप का अध्ययन करना।
3. गीत, ग़ज़ल एवं नज़्म के सांगीतिक स्वरूप का अध्ययन करना प्रस्तुत शोध परियोजना का उद्देश्य है।

2.1.4 शोध विधि:-

विभिन्न प्रकार के अनुसंधानों में विभिन्न प्रकार की विधियाँ हैं, परंतु इस लघु परियोजना से संबंधित दत्त संग्रह के लिए वर्णात्मक तथा ऐतिहासिक विधियों का प्रयोग किया गया हैं।

2.1.5 दत्त संग्रह स्त्रोत :-

प्रस्तुत लघु परियोजना के लिए पुस्तकें,पत्र पत्रिकाएं,दृश्य श्रव्य उपकरण,इंटरनेट आदि उपकरणों द्वारा दत्त संग्रह एकत्रित किया गया है।

2.1.6 दत्त विश्लेषण:-

दत्त सामग्री का विश्लेषण गुणात्मक तथा गिननात्मक विधियों द्वारा किया गया है।

2.1.7 शोध कार्य की सीमाएं:-

समय अवधि को सामने रखते हुए, इस लघु परियोजना को गीत,गज़ल और नज़्म की चुर्निंदा लोक प्रिय रचनाओं तक सीमित रखा गया है।

तृतीय अध्याय

गीत, ग़ज़ल और नज्म का विश्लेषण

3.1 गीत:-

संगीत शब्द गीत शब्द में सम उपसर्ग लगाकर बना है।।सम का अर्थ है सही ढंग से और गीत से तात्पर्य गाने योग की रचना से हैं।अर्थात इसका अभिप्राय ये हुआ कि वह सुंदर गीत जिससे भलीभाँति सही प्रकार से गाया जा सके।भारतीय सुगम संगीत में गीत विद्या एक सक्षकत गायन विद्या के रूप में दिखाई देती है। ग़ज़ल, भजन, नज़्म के साथ-साथ जनमानस में सुगम संगीत को लोकप्रिय करने में गीतों का विशेष योगदान रहा है। सुंदर और सक्षक्त साहित्य से युक्त गीत को जब एक सनकी का स्वर्ण रचना में बाँधकर,मज़दूर एवं आकर्षक आह्वाहन के माध्यम से लोगों तक पहुँच जाता है तो लोग उसे अपने हृदय में सहजता से ग्रहण कर लेते हैं। गीत की यह भी एक विशेषता हैं कि वह धरती से जुड़ा है और साधारण जनजीवन के अधिक निकट है। कावय के साथ लय और स्वर का संयोजन उसे और भी आकर्षक व मनमोहक बना देता है। सुगम संगीत मैं जिन गीतों का प्रयोग होता है,उनके रचनाकारों ने एक साधारण व्यक्ति के सभी अंतर भावों को काव्य के माध्यम से प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। यही कारण है कि प्रेम और शिंगार से परिपूर्ण असंख्य गीतों को स्वरबद्ध करके गाया गया है,परंतु इसके साथ-साथ अन्य भावों, विषयों ,समस्याओं और विचारों से सम्बंधित गीतों को भी लिखा और स्वरबद्ध किया जाता रहा है।

3.1.1 गीत का साहित्यिक रूप:-

20वी शताब्दी में गीत गायन शैली का स्वरूप संगीत की विभिन्न शैलियों में अलग-अलग ढंग से विकसित होता रहा,और धीरे-धीरे उसने सुगम संगीत की एक गायन विधा के रूप में अपना स्थान बना लिया। वैसे तो शास्त्रीय संगीत में ख़याल,ठुमरी,द्रुपद, धमार आदि शैलियों में जो शब्द रचनाएँ गायी जाती है प्राय उनके लिए बंदिश शब्द का प्रयोग किया जाता है। हम जिस गीत के साहित्यिक स्वरूप की बात कर रहे हैं वह उर्दू और हिन्दी का साहित्यक गीत है जो प्राचीन सांस्कृतिक भाषा की गीति शैली, मध्य काल की पद परंपरा और वर्तमान समय के गीत(गेय कविता) शैली से प्रभावित हैं। इन गीतों को लिखने वाले हिन्दी ओर उर्दू के कवि और शायर या फ़िल्म संगीत के लिए लिखने वाले कवि है। इन गीतों की धुनों का विकास भी सहज रूप में हुआ है।

वर्तमान में गेय रचनाओं की ओर झुकाव आकाशवाणी से प्रसारण के कारण बहुत अधिक पाया जा रहा है। चलचित्र जगत में भी ऐसे गीतों ने अपनी मधुरता के कारण अपना स्थान बनाया है।

पारसी रंगमंच मे खेले जाने वाले नाटकों के तहत जो गीत गाए जाते थे, उन्हें हार्मोनियम,ढोलक या तबले के साथ कम से कम वादयो पर गा लिया जाता था।धुन भी प्राय किसी एक राग में सीधे-सीधे ढंग से बना ली जाती थी। जैसे-जैसे फ़िल्मी संगीत का प्रभाव बढ़ा, गीतों की धुनें भी परिष्कृत होने लगी और गीतों में वाद्य संयोजन (आर्केस्ट्रा) का विकास फ़िल्म संगीत ने अपनी आवश्यकताओं के मुताबिक़ कर लिया।

उदाहरण के लिए:-
हिन्दी और उर्दू कवियों में निम्नलिखित नाम उल्लेखनीय हैं-
मैथिलीशरण गुप्त(1886-1964),माखनलाल चतुर्वेदी(1889-1968),सूर्यकांत त्रिपाठी निराला(1896-1961),सुमित्रानंदन पंत(1900-1977),महादेवी (1907-1987),हरिवंश राय बच्चन(1907-2003),राजा मेहंदी अली ख़ान(1915-1966), राजेंद्र क्रिशन(1919-1987),साहिर लुधियानवी(1921-1980),हसरत जयपुरी(1922-1999),शैलेन्द्र(1923-1966),नीरज गोपालदास(1925-2018), रवींद्र जैन(1944-2015) आदि

पंजाबी कवियों के नाम:-
धनीराम चात्रक(1876-1954)
हरभजन सिंह(1920-2002)
शिव कुमार बटालवी(1936-1973)

3.1.2. गीत का सांगीतिक स्वरूप:-

गीत लोक संगीत में गहरा संबंध है। आज किसी व्यक्ति द्वारा लिखा गया गीत कल का लोक गीत भी हो सकता है। आज की साहित्यिक गीत ने लोक संगीत से बहुत कुछ प्राप्त किया है।लोक गीत अपने भीतर अपना लोक संगीत भी लिए हुए होता है। शास्त्रीय गायन शैलियों से लेकर सुगम संगीत की सभी गायन शैलियों ने अपने रूप को आकर्षक बनाने के लिए लोक संगीत के रंग का भरपूर इस्तेमाल किया है। जहाँ साहित्य में कवियों ने अपने गीतों को सहज और स्वाभाविक बनाने के लिए लोक गीतों के छंदो,उपमायो,प्रतीको आदि का भरपूर इस्तेमाल किया,वहीं हमारे संगीतकारों ने भी सृजन किया।

कई बार तो लोक धुनें किसी गीतकार को गीत रचना मे भी सहायता पहुँचाती है। फ़िल्मी संगीत भी लोक संगीत से परभावित है। यदि हम विचार करें तो आज का फ़िल्मी संगीत इतना लोकप्रिय,जनप्रिय,सक्षक्त हो गया है कि अगर किसी सीमा तक इसे लोक संगीत की संज्ञा दे दी जाए तो कुछ ग़लत नहीं होगा,क्योंकि फ़िल्मी संगीत का मुख्य उद्देश्य लोगों का मनोरंजन करना ही होता है,जिसके कारण फ़िल्मी संगीत के शब्द, रचना एवं धुन सरल और आकर्षक होती है। इस लिए फ़िल्मी संगीत की बनतर के आधार पर इसको लोक संगीत की शैली से जोड़ना कतई ग़लत नहीं होगा।

फ़िल्म संगीत ने गीत-गायन शैली को विकसित करने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। फ़िल्म संगीत के माध्यम से गीत-गायन शैली मे साहित्य और संगीत दोनों पहलुओं से अनेकों नवीन प्रयोग हुए,जिनमें केवल फ़िल्मी गीतों का विकास ही नहीं हुआ,बल्कि उनके साथ-साथ ही फ़िल्मी संगीत के इन प्रयोगों ने ग़ैर-फ़िल्मी सुगम संगीत के गीतों को भी प्रभावित किया। सुगम संगीत की एक ऐसी गीत-गायन शैली का विकास हुआ,जिसमें संगीत और साहित्य दोनों का बराबर महत्व था।

उदाहरण के लिए:-
"पूछो न कैसे मैंने रैन बितायी"
राग-अहीर भैरव,फ़िल्म-मेरी सूरत तेरी आंखें,
ताल-कहरवा

शास्त्रीय संगीत से प्रभावित गीत:-
"कुहू कुहू भोले कोयलिया"
राग-सोहनी,बहार,जौनपुरी और यमन,फ़िल्म-स्वर्ण सुंदरी
"मधुबन मे राधिका नाचे रे"
फ़िल्म कोहिनूर,राग-हमीर

3.2. ग़ज़ल:-

गज़ल को समझने के लिए ग़ज़ल के माज़ी में झांकना बहुत ज़रूरी है। "ग़ज़ल" शब्द अरबी ज़ुबान का है। लुगत में जिसका अर्थ स्त्रियों से बात करना या यूँ कहा जाए के महबूब से मोहब्बत भरी वार्तालाप करनी।कुछ विद्वान इसकी उत्पत्ति अरबी भाषा के "गज़ाल"शब्द से मानते हैं,

जिसका अर्थ " हिरण का बच्चा", शिकारी के भय से जिसके हृदय में वेदना,तड़प,बेबसी,पुकार व करूणा और विनय के भाव पैदा होते है। यह भाव ग़ज़ल की तासीर से मिलते जुलते है।सुगम संगीत की गायन विधाओं में ग़ज़ल को विशेष महत्व प्राप्त है या इसे सुगम संगीत की सबसे सशक्त विधा कहा जा सकता है। ग़ज़ल लिखने और गाने का इतिहास बहुत पुराना है,पर बीसवीं शताब्दी में गज़ल गायिकी ने अपने आपको बहुत विकसित और विस्तृत किया। जिसके कारण यह साधारण श्रोताओं से लेकर कला को गहराई से समझने वाले श्रोताओं में बराबर लोकप्रिय हुई। उसकी पृष्ठभूमि में शास्त्रीय और उपशास्त्रीय गायन शैलियों का विशेष महत्व रहा और उर्दू साहित्य की लोकप्रिय विधा होने के कारण गज़ल गायिकी का साहित्यिक पक्ष भी बहुत मज़बूत रहा।
संगीत और साहित्य दोनों कलाओं में ही ग़ज़ल को बहुत सम्मान प्राप्त हुआ। अनेक शायरों,संगीतकारों और गायकों ने अपनी कलात्मक प्रतिभा के रंग में ग़ज़ल के रूप को सजाया और संवारा।

3.2.1 गज़ल का साहित्यिक रूप

पहली बात तो यह है कि गज़ल के पहले शेयर को "मतला" कहते हैं और आख़िरी शेयर को "मक्ता"। मक्ता में आमतौर पर शायर का तख़ल्लुस अर्थात उपनाम शामिल होता है और मतला का जो शेयर होता है उसका रूपविधान या शकल बाकि शेयरों से थोड़ी अलग होती है। कहने से मुराद यह है कि "मतला" में शेयर की दोनों तुक्को में रदीफ़ काफ़िया होता है। रदीफ़ काफ़िया से मतलब तुक्क के आख़िर में आने वाले एक ख़ास वज़न के शब्दों से हैं , जैसे

=> जनाब निदा फ़ाज़ली साहब की ग़ज़ल का एक मतला प्रस्तुत है :-

"गरज बरस प्यासी धरती को फिर पानी दे मौला, चिड़ियों को दाने, बच्चों को गुड़धानी दे मौला॥"

तो पानी और गुड़धानी काफ़िया है तथा दे मौला रदीफ़ है।परंतु अगले शेयरों में पहली पंक्ति में रदीफ काफ़िया नहीं होता, दूसरी तुक्क में रदीफ़ काफ़िया होते हैं।
जैसे कि :-
"दौ और दौ का जोड़ हमेशा चार कहाँ होता है,
सोच समझ वालों को थोड़ी नादानी दे मौला।"

और मक्ता की उदाहरण :-
"हादसे कुछ ऐसे दिल पे हो गए,
कि हम समुंद्र से भी गहरे हो गए॥"
का मक्ता इस प्रकार है :-
"क्यों ख़रीदेगा खिलौने अब कोई,
अश्क दिल लोगों के सस्ते हो गए॥"
इस मक्ते में शायर "इब्राहिम अश्क" ने "अश्क" उपनाम का प्रयोग किया है।

3.2.2 गज़ल का सांगीतिक स्वरूप:-

ग़ज़ल भारतीय सुगम संगीत की एक ऐसी गायन विधा है, जो हज़रत अमीर खुसरो से लेकर आज तक अपने साहित्यिक और सांगीतिक विशेषताओं के कारण कला मर्मज्ञों,बुद्धीजीवियों विद्वानों से लेकर साधारण श्रोता को सदा आकर्षित करती रही। इसकी ख़ूबसूरती यह है कि भारतीय संगीत में ध्रुपद, ख्याल और ठुमरी के जो अलग-अलग दौर आए, ग़ज़ल ने इन सभी युगों में अपने वजूद को क़ायम रखा।उसके गाए जाने के प्रमाण उस समय में भी मिलते हैं जब ध्रुपद गायन अपने जौबन पर था। ध्रुपद के बाद जब ख्याल गायन शैली ने अपना विस्तार करना शुरू किया तो भी ग़ज़ल अपनी दिलकशी के कारण अपना स्वतंत्र अस्तित्व बनाए रखने में सफल रही। ठुमरी और दादरा के युग में तो गज़ल का रंग अपनी नई चमक-दमक के साथ उभरा और 20वीं शताब्दी के पांचवें और छठे दशक से इस गायन शैली ने अपने आप को हिन्दोस्तान की एक ऐसी गायन शैली के रूप में स्थापित किया जिसमें शास्त्रीय,उप-शास्त्रीय और सुगम संगीत के रंगों का अनूठा सम्मिश्रण था। लगभग 7 दशकों तक ग़ज़ल गायक शैली हिंदुस्तानी संगीत जगत पर एक श्रेष्ठ और आकर्षक गायन विधा के रूप में छायी रही।वह फ़िल्मी और ग़ैर-फ़िल्मी सुगम संगीत के माध्यम से अपना विस्तार बढ़ाती रही और समस्त भारत में उसने अपनी रोशनी से समस्त हिन्दुस्तानी मौसिकी के रंगों को उनकी पूरी चमक के साथ पेश किया।

चाहे वह कोई भी कला हो,लोक-संस्कृति का प्रभाव पड़ना स्वाभाविक है। साहित्य और संगीत पर भी लोक-संगीत का प्रभाव बहुत गहरे रूप में दिखाई देता है। इसलिए हमारे लोक संगीत ने हर एक गायन विधा को प्रभावित किया है।

चाहे वो शास्त्रीय गायन विधाएं हो या सुगम संगीत।हमारी अनेक गायन शैलियां जैसे ठप्पा, दादरा, चैती,ठुमरी, सावन आदि अनेकों गायन शैलियाँ लोक संगीत से ही विकसित हुई है और हमारे बहुत से गायक ग़ज़ल गाने के साथ साथ इन गायन शैलियों में भी महारत रखते थे। जैसे "बेग़म अख़्तर साहिबा",ग़ज़ल के साथ साथ ठुमरी,दादरा, चैती आदि गायन शैलीयों गुळ गाने में महारत रखती थी। ऐसे में स्वाभाविक है कि उनके ग़ज़ल-गायन पर इन गायन शैलियों का भी प्रभाव कहीं न कहीं नज़र आता है। इसी तरह सभी ग़ज़ल गायक अपने जिस क्षेत्र से आए,वह अपने साथ अपने भीतर अपने क्षेत्र के लोक-संगीत के संस्कार अवश्य लाए और जब उन्होंने ग़ज़लों का स्वरबद्ध किया तो उसमें उनकी लोक-संगीत सोंधी ख़ुशबू जाने-अंजाने रूप में कहीं न कहीं आ ही गयी। जिस तरह फ़िल्मी संगीतकारों ने अपने-अपने क्षेत्र के लोक संगीत को अपनी कलात्मक प्रतिभा के ज़रिए फ़िल्मों में प्रस्तुत किया,उसी तरह ग़ज़ल गायकों ने भी अपने लोक-संगीत को कहीं न कहीं अपने दोनों में सुमों लिया।

उदाहरण के लिए:-
ग़ुलाम अली जी की ग़ज़लों में ठुमरी,दादरा,लोक गीत आदि गायन शैलियों का प्रभाव दिखाई देता है।

मेहंदी हसन जी की ग़ज़लों में ख़याल गायन शैली का प्रभाव दिखाई देता है। हालाँकि यह संगीतकार ग़ज़ल की ख़ूबी को बरकरार रखते थे।

इसी प्रकार जगजीत सिंह की जी की गजलों में गीत का असर दिखाई देता है। हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत की मध्यकालीन गायन शैलियों के साथ साथ गज़ल अपना ऐतिहासिक महत्व रखती है। जहाँ राज-दरबारों में ध्रुपद गायकों को राजाश्रय प्राप्त था,वहीं ग़ज़ल गायकों को भी राज-दरबारों में सम्मान प्राप्त था,जिसकी चर्चा पहले की जा चुकी है।मध्य काल से लेकर आज तक ग़ज़ल का वर्चस्व और उसे शास्त्रीय संगीत की अन्य गायन शैलियों के बराबर ला खड़ा करता है। अनेक शास्त्रीय गायकों का ग़ज़ल प्रेम यह साबित करता है कि ख्याल,ठुमरी के साथ साथ ग़ज़ल भी हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत के रंग में रची-बसी हुई है। ख्याल,ठुमरी, ध्रुपद आदि शैलियों के साथ सदियों का सफ़र तय करने के कारण इस पर उनका प्रभाव होना स्वाभाविक ही है।

20वीं शताब्दी में जो संस्कृत क्रांति आयी,उसमें फ़िल्म उद्योग की भी अहम भूमिका रही। फ़िल्म उद्योग ने आम आदमी के मनोरंजन के लिए जो सामग्री तैयार की, उसमें संगीत की भी महत्वपूर्ण भूमिका थी।फ़िल्मों में प्लेबैकम्यूज़िक और प्लेबैक सिंगिंग थे फ़िल्म के समूचे प्रभाव को रोचक और आकर्षक बनाया जाने लगा।फ़िल्मों के लिए शुरुआती दौर में ऐसे संगीतज्ञों को संगीत निर्देशन के लिए बुलाया गया,जिनकी पृष्ठभूमि शास्त्रीय संगीत से संबंधित थी,इसलिए उन्होंने फ़िल्मों में शास्त्रीय और उप-शास्त्रीय संगीत की अनेक विधाओं का ख़ूब प्रयोग किया।उदाहरण के लिए बेग़म अख़्तर और पंडित ओमकार नाथ ठाकुर की ग़ज़लों और भजनों को उपशास्त्रीय संगीत की परिधि में रखा जा सकता है। इस तरह इन संगीतज्ञों ने फ़िल्म संगीत में ग़ज़ल, भजन,क़व्वाली का ख़ूब इस्तेमाल किया। इस तरह फ़िल्मी संगीत में भी गज़ल गायिकी कईदशकों तक छाई रही। फ़िल्मी संगीत की अपनी तमाम सीमाओं के बावजूद फ़िल्मों में गायी गई धुनों ने अपना स्वतंत्र अस्तित्व बनाया जिससे बहुत से गज़ल गायक अपनी महफ़िलों के दौरान अपने या अन्य किसी वरिष्ठ गायक द्वारा फ़िल्म में गायी गई ग़ज़ल अपने कार्यक्रम के दौरान प्रस्तुत करते नज़र आ जाते हैं। ग़ैर-फ़िल्मी ग़ज़लों की तरह ही सैकड़ों फ़िल्मी ग़ज़लें,ग़ज़ल के दीवानों के लिए बेहद अजीज़ है।

उदाहरण:-

* गीत से प्रभावित गज़ले=>गरज बरस प्यासी धरती को फिर पानी दे मौला,

=>होश वालों को ख़बर क्या, बेख़ुदी क्या चीज़ है।

* शास्त्रीय संगीत से प्रभावित ग़ज़ले=>हंगामा है क्यों भरपा (राग दरबारी)

=>फ़ासले ऐसे भी होंगे (राग रागेशवरी)

3.3 नज़्म

=> सुगम सगींत की गायन शैलीयो में गीत और ग़ज़ल को विशेष स्थान प्राप्त है और आमतौर पर इन्हीं शैलियों से ही सुगम संगीत की पहचान मानी जाती है। ये दोनों गायन शैलीया साहित्य से गहरा संबंध रखती है।उर्दू साहित्य में गीत, ग़ज़ल के साथ-साथ एक और काव्य रूप में विकसित हुआ, जिसे आज "नज़्म" के नाम से जाना जाता है।उर्दू साहित्य में नज़्म क्रांति,परिवर्तन करने वाली विधा के रूप में मानी जाती है याँ इसे पुराने और परम्परागत काव्य रूपों की प्रतिक्रिया में जन्मी काव्य विधा के रूप ने माना जाता है।

नज़्म ने उर्दू कविता को हुसनो-इश्क़ ही सीमित विषयों से बाहर निकाल कर समाज,राष्ट्र व दुनिया के हरेक मौज़ू पर सोचने के लिए प्रेरित किया,जिसमें शायरों ने अपने मुताबिक़ काव्य विधान तय करके अपने स्वतंत्र विचारों की अभिव्यक्ति की और इसे सरल,स्पष्ट शब्दों में कहा जाए तो नज़्म उर्दू के परंपरागत साहित्य काव्य रूपों से शिल्प,संरचना और विषय की दृष्टि से पूरी तरह भिन्न और स्वतंत्र कही जा सकती है। हालाँकि इन तमाम बातों के बावजूद उर्दू शायरों ने अपनी नज्मों में रवानी और लय को नहीं छोड़ा, जिन शायरों ने काफ़िया और रदीफ़ की बंदिश को भी नहीं स्वीकार किया, उन शायरों ने भी अपनी नज़्मों में लफ्जों का रख रखाव,गति और रवानी के रूप में नज़्म के भीतर आंतरिक संगीत को बनाए रखा, हालाँकि लय विहीन अर्थात नसरी नज़्म भी वजूद में आयी,पर वही नज़्म अधिक लोकप्रिय हुई जो आज़ाद होते हुए भी,अपने भीतर लयातमकता और आंतरिक संगीत को क़ायम रख सके।अपनी इसी विशेषता के कारण गीत और ग़ज़ल की तरह न जाने कितने ही शायरों की नज़्मों को स्वरों में पिरोकर संगीतकारों ने उन्हें ख़ूबसूरती और प्रभावशाली बना दिया।

3.3.1 नज़्म का साहित्यिक रूप

हर एक ज़ुबान की शायरी का संगीत से गहरा रिश्ता होता है,ये बात बड़ी स्वभाविक है,इसलिए उर्दू भाषा के काव्य का रिश्ता संगीत से ना हो ये कैसे हो सकता है। उर्दू साहित्य में मुख्य रूप से दो भेद हैं-एक नज़्म और दूसरा नसर। नज़्म के तहत उर्दू शायरी की भी काव्य विधाये और नसर के तहत उर्दू का गध साहित्य आता है। इसलिए विशाल और विस्तृत दृष्टिकोण से देखा जाए तो उर्दू शायरी की सभी असनाफ नज़्म के दायरे में आ जाते हैं,जिनमें-मसनवी,क़सीदा,मर्सिया,रुबाई ग़ज़ल कता आदि उर्दू शायरी की मुख्य शैलियाँ है। प्रारंभिक उर्दू शायरी ने अपने आपको अरबी,फ़ारसी शायरी और साहित्य से जोड़ा। अरबी, फ़ारसी शायरी और साहित्य की रोशनी में अपने कलाम कहे। ईरानी शायरों की शायरी का ख़ास प्रभाव इनमें दिखाई देता है। शुरुआती दौर में उर्दू काव्य जिन शायरों से प्रभावित हुआ, उनमें मौलाना,जलालुद्दीन,रूमी,हाफ़िज़ व अन्य ईरानी शायर उल्लेखनीय हैं। इस प्रकार अमीर खुसरो भी फारसी शायरी के बहूत बड़े विद्वान थे।उपरोक्त शायरों की शायरी में संगीतक पक्ष और बाहरी संगीत की तीव्रतम अभिव्यक्त हुई।

3.3.2 नज़्म का सांगीतिक स्वरूप

शायरी की एक अन्य विधा नज़्म अपनी पृष्ठभूमि में ग़ज़ल,मर्सिया, कव्वाली जैसी विधाओं से सांगीतिक संस्कार प्राप्त करती है, जैसे कि पहले भी चर्चा की जा चुकी है कि आधुनिक नज़्म उर्दू की वे स्वच्छंद कविता है, जिसमें शायर को बहर-ओ-वज़न के गागले मैं बहूत आज़ादी मिली हुई है और इसमें शायद अपनी बात को अधिक सहजता से कह सकता है और उस पर किसी बाहरी छंद के कठोर नियम लागू नहीं होते हैं।यहाँ एक बात का उल्लेख करना अति आवश्यक है कि 19वीं सदी और 20वीं 21वीं शताब्दी मे इससे नई उर्दू कविता ने अपने भीतर अनेक विषयों को समेटा
और नज़्म के दायरे को और अधिक विशाल किया।इसलिए अपने आपको ग़ज़ल से अलग करके एक स्वतंत्र विधा के रूप में विकसित किया।

नज़्म की इससे विकास यात्रा के आधार पर नज़्म का जो स्वरूप तैयार होता है,उसको ध्यान में रखते हुए सांगीतिक दृष्टि से नज़्म के यह रूप हमारे सामने आते हैं:-

A. मुशायरों की नजम
B. पाकिस्तानी नज़्म गायन
C. हिन्दुस्तानी नज़्म गायन
D. फ़िल्मी नज़्म गायन ।

उपरोक्त नज़्म की चार गायन शैलियों में हम नज़्म के सभी रूपों को समेटने की कोशिश करेंगे, क्योंकि नज़्म को उन्हीं गायकों ने गाया, जो मूलरूप में ग़ज़ल गायक थे, परंतु नज़्म अपनी सहितयक विशेषताओं के कारण गज़ल से भिन्न थी।इसलिए इन ग़ज़ल गायकों ने नज़्म को गाया,तो उन्हें इसके लिए एक विशेष प्रकार की धुन और एक ऐसे वातावरण का निर्माण करने की कोशिश करनी पड़ी है,जो नज़्म की प्राकृतिक,उसके स्वभाव और उसके स्वरूप के अनुकूल हों। इसके लिए शायर और उसकी साहित्य की रचना की संगीतज्ञ के लिए प्रेरणा और पथ-प्रदर्शक का काम करती है और संगीतज्ञ या गायक,शायरी और ख़यालात की रोशनी में उसे सुरों का लिबास पहनाने की कोशिश करता है। शास्त्रीय संगीत और लोक संगीत की कई राहों का भ्रमण करने के बाद ही तीसरा मार्ग जिसे संगीत का 'मध्य मार्ग' भी कहा जाता है, सुगम संगीत है।सुगम संगीत अपनी आवश्यकता अनुसार शास्त्रीय संगीत व लोक संगीत की मदद लेता रहता है। जिससे सुगम संगीत में आकर्षण और स्वाभाविकता दोनों बराबर बने रहते हैं।

सुगम संगीत की गायन शैलियों गीत,ग़ज़ल,भजन की तरह नज़्म ने भी अपने रूप को निखारने,सँवारने और सजाने के लिए इन दोनों धाराओं का प्रयोग किया है। नज़्म गीत और ग़ज़ल की अपेक्षा अधिक विस्तृत होती है। नज़्म इन तमाम पड़ावो के बावजूद अपने संगीततक स्वरूप में लोक संगीत और शास्त्रीय संगीत के कभी प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित ज़रूर हुई। भारतीय फ़िल्म संगीत मे पार्श्व गायन के माध्यम से हिन्दी और उर्दू की काव्य विधाओं को संगीत के माध्यम से रोचक और सहज बनाने की जो कोशिशें की गई,वे फ़िल्म संगीत की परंपरा को समृद्ध और विशाल बनाती है। फ़िल्म जगत के आकर्षण में हिन्दी और उर्दू साहित्य से कवियों और शायरों को अपनी ओर आकर्षित किया। ख़ासतौर पर तरकी पसंद शायरी से जुड़े हुए कुछ नाम जिनमें:-साहिर लुधियानवी,मजरूह सुल्तानपुरी,कैफी आज़म ,जां निसार अख़्तर उल्लेखनीय हैं। इनमें शायरों ने अपनी शायरी के विभिन्न रागों से ही फ़िल्म संगीत के वातावरण मैं सौंदर्य के साथ-साथ सामाजिक चेतना के रंग को भी भरना शुरू कर दिया। समाजवादी विचारधारा से प्रभावित होने के कारण यह सामाज के शोषित वर्ग के प्रति अति संवेदनशील थे। इसलिए किसान, मज़दूर, ग़रीब, महिलाओं की वेश्यावृत्ति,बाल मज़दूरी आदि विषय इनकी शायरी में पूरी संजीदगी से शामिल हैं। इन बेरोज़गार नौजवान शायरों ने जब क़लम की नोक पर फ़िल्म जगत में अपनी जगह बनाई, तो यह अपनी रोज़ी-रोटी कमाने के साथ-साथ अपनी रुचि और विचारधारा को भी किसी न किसी रूप में इन फ़िल्मों को माध्यम बनाकर प्रकट करने के लिए बेचैन होने लगे। स्वतंत्रता के बाद आम आदमी का यह ख़्वाब टूट चुका था कि इसे आज़ादी के बाद सभी सुख सुविधायें,सामाजिक,आर्थिक आज़ादी प्राप्त हो जाएगी। जब ऐसा न हो सका तो भारतीय जन मानस की अवस्था एक अजीब तड़प और बेचैनी के दौर मे से गुज़र रही थी। प्रसिद्ध क्रांतिकारी शायर फ़ैज़ की नज़्म की यह पंक्तियां इस दौर का चित्रण इस तरह करती है:-

"ये दाग़-दाग़ उजाला, ये शब गुज़ीदा सहर,
कि इन्तज़ार था जिसका,वो सहर तो नहीं।"

इन हालातों का असर हमारे फ़िल्मी जगत पर भी हुआ और कुछ सामाजिक समस्याओं से सम्बंधित में फ़िल्मों और रोमांटिक फ़िल्मों के माध्यम से इन शायरों ने अपनी बेचैनी को अभिव्यक्त किया है।

इन शायरों ने अपने गीतों,गज़लों,नज़्मों के माध्यम से फ़िल्म संगीत के दायरे में रहते हुए भी अपनी कलात्मक प्रतिभा का लोहा साहित्यिक आलोचकों से भी मनवा लिया।

=> नज़्म, जिसे साहर ने फ़िल्म शंकर हुसैन के लिए लिखा, एक रोमांटिक धून के रूप में मशहूर हुई। इस धुन के बोल थे:-
"कहीं एक मासूम नाज़ुक सी लड़की बहुत ख़ूबसूरत, मगर साँवली सी।"
मुहम्मद रफ़ी ने इसे अपनी धीमी और मधुर आवाज़ में गाया है।

=>कैफी आज़मी द्वारा लिखी गई एक और नज़्म जिसे महान संगीतकार मदन मोहन ने स्वरबद्ध किया था, जिसके बोल थे:-
"होके मजबूर मुझे, उसने बुलाया होगा"

=>प्रसिद्ध संगीतकार रवि ने साहिर लुधियानवी की अनेको अमर रचनाओं की धुन बनायी, जिनमें कुछ यादगार नज़्मे भी शामिल है जिसे "महेंद्र कपूर" ने "गुमराह" फ़िल्म के लिए गाया था। ये नज़्म थी-"चलो इक बार फिर से अजनबी बन जाए हम दोनों"

उपसंहार

शोधकर्ताओं ने अपने अध्ययन के अंतर्गत सुगम संगीत और उनकी प्रमुख गायन शैलियां गीत, ग़ज़ल और नज़्म और इनसे सम्बंधित विषयों का विश्लेषणात्मक अध्ययन करने का प्रयास किया है और इस अध्ययन से जो निष्कर्ष उभर कर आया उसे यहाँ प्रस्तुत किया जा रहा है। सुगम संगीत 20वीं शताब्दी की विशेष उपज के रूप में सामने आती है। यूँ तो सुगम संगीत की धारा प्राचीन काल से ही,किसी न किसी रूप में बहती आयी है,परंतु आधुनिक काल में सुगम संगीत अपने आप में एक स्थापित अभिव्यंजना विधि के रूप में प्रतिष्ठित हुई। प्राचीन काल और मध्यकालीन साहित्यिक और सांगीतिक विधाओं के अनेक वर्तमान सुगम संगीत की पृष्ठभूमि बने हैं,विशेषकर मध्यकालीन भक्त कवियों के साहित्यिक पद वर्तमान सुगम संगीत की गीत गायन शैली को विकसित करने में अपना विशेष महत्व रखते हैं। आज भी इन पदों को भक्ति-गीतों या भजनों के रूप में गाया जाता है। कबीर, सूर,तुलसी आदि की भावप्रद रचनाएँ 20वीं शताब्दी के सुगम संगीत की प्रेरणा स्त्रोत मानी जा सकती है। आज के गीतों में प्रेम,श्रृंगार, विरह आदि रंगों का जो मिश्रण दिखता है वो 'प्रेम-दिवानी' मीरा के गीतों की कसक से बहुत हद तक प्रभावित हुआ है। इसी तरह मध्यकालीन शास्त्रीय गायन विधाओं ने भी आज के सुगम संगीत के लिए वातावरण तैयार किया है।
इससे लघु शोध परियोजना में हमने सुगम संगीत की तीन प्रमुख गायन शैलियों का विश्लेषण किया।

उपरोक्त गायन शैलियों के सम्बंध में प्राप्त निष्कर्ष के आधार पर क्रमवार तीनों गायन शैलियों के सम्बंध में कुछ विचार प्रस्तुत है :-
गीत गायन शैली मध्यकाल में विद्यमान् थी। जयदेव, विद्यापति और अमीर खुसरो ने इनकी नींव को मज़बूत किया। कबीर,मीरा, तुलसी,सूर,नानक आदि अनेकों संतों,भक्तों ने पदों के रूप में इन भक्ति-गीतों को गाकर इन्हें साहित्यिक और सांगीतिक दोनों ही पक्षों से सजाया,सँवारा और लोकरंजक बनाया। मध्यकालीन में भक्ति-गीतों की इस समृद्ध परंपरा का लाभ बीसवीं शताब्दी में विकसित हुई गीत शैली को ख़ूब मिला। सुगम संगीत की अन्य गायन शैली जिसे नज़म कहा जाता है।मूलत: नज़म उर्दू साहित्य की एक काव्य विधा है, जो उर्दू काव्य में नियमबद्ध और परंपरागत कविता की प्रतिक्रिया स्वरूप उपजी है।

उर्दू काव्य की अन्य काव्य शैलियों ग़ज़ल, मरसिया, मसनवी,कता,कसीदा आदि के प्रभावों को क़बूल करते हुए भी नज़्म के उर्दू कविता के विभिन्न काव्य विधाओं के लिए बने नियमों से बग़ावत की। 18वीं शताब्दी में नज़ीर,अकबराबादी इस शैली को विकसित करने के लिए विशेष रूप से माने जाते हैं।

सुगम संगीत की एक और विधा जिसे ग़ज़ल के रूप में माना जाता है,इसी सुगम संगीत की श्रेष्ठ गायन विधा भी माना जा सकता है, क्योंकि यह अपने साहित्यिक और सांगीतिक वैभव के कारण साहित्य और संगीत से लगाव रखने वाले कला प्रेमियों में बेहद लोकप्रिय रही है। ग़ज़ल,पिछली सात-आठ शताब्दियों से कही भी जा रही है और गायी भी जा रही है। अमीर खुसरो के समय से भारत में ग़ज़ल ने अपने साहित्यक और सांगीतिक पक्षों को समृद्ध करना शुरू करदिया था। 19वीं शताब्दी के अंत में गज़ल को अपनी ख्याति हुसन-ओ-इश्क़ की शायरी,आशकना मिजाज़ के कारण हाली और आज़ार जैसे साहित्य आलोचकों का विरोध भी झेलना पड़ा। इस विरोध से इसने अपने आपको व्यापक और समृद्ध किया। 20वीं शताब्दी में गज़ल से मोहब्बत करने वाले शायरों ने गज़ल को नए लहज़े,नए स्वरूप और वर्तमान अनुकूल बनाते हुए, युग की सर्वश्रेष्ठ काव्य बनाने में कोई कसर नहीं छोड़ी।

सुगम संगीत में बहुत से सृजनात्मक और उपयोगी प्रयोग निरंतर होते रहे हैं। सुगम संगीत के फ़िल्मी और ग़ैर-फ़िल्मी गायकों ने राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर बहुत नाम और यश भी कमाया है पर इस सब के बावजूद भी सुगम संगीत पर आलोचनात्मक दृष्टि से बहुत लेखन कार्य नहीं हुआ है। सुगम संगीत की विधाओं को एक व्यवस्थित स्वरूप में प्रस्तुत करने के लिए संगीत और साहित्य से जुड़े विद्वान, बुद्धिजीवि कलाकारों आलोचकों की ओर से पूरी संजीदगी के साथ कोशिशें होनी चाहिए, ताकि सुगम संगीत को लोकप्रियता के साथ-साथ सम्मान और प्रतिष्ठा के साथ भी देखा जाए। इस लघु शोध परियोजना के ज़रिए सुगम संगीत की इन्ही तीनों विधाओं को साहित्य और संगीत की दृष्टि से समझने की कोशिश की गई है। सुगम संगीत और इसकी विधाओं से जुड़े अनेकों विषय हैं, जिन पर लगातार खोजकार्य होता रहना चाहिए। इस शोध परियोजना की एक उपलब्धि यह है कि शोधार्थी को ख़ुद इन तीनों विधाओं की बारीकियों को समझने का सुअवसर मिला और यह कार्य और विद्यार्थियों को भी इस दिशा में आगे बढ़कर गज़ल,गीत और नज़्म के अंतर को समझने की प्रेरणा देगा। जिसकी आमतौर पर कमी महसूस की जाती है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

हिन्दी पुस्तकें:-

1) तिवारी डॉ. उमाशंकर, आधुनिक गीत का काव्य,वाणी प्रकाशन, (1997)

2) प्रकाश पंडित, अख़्तर शीरानी और उनकी शायरी, राजपाल एंड संस, दिल्ली (2000)

3) शर्मा इन्दू, डॉ. 'सौरभ' भारतीय फ़िल्म संगीत में ताल समन्वय, कनिष्क प्रकाशन, नई दिल्ली, (2006)

4) गर्ग, डॉ. मुकेश, साहित्य और सौंदर्य बोध, कनिष्क प्रकाशन , दिल्ली (2010)

5) फ़ाज़ली निदा, मुहम्मद अल्वी शब्दों का चित्रकार, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली (2006)

6) कैफ़ सरस्वती सरन, नज़ीर अकबराबादी, राजपाल एंड संस, संस्करण (1992)

7) बृहस्पति आचार्य कैलाशचंद्र देव, ध्रुपद और उसका विकास, बिहार, राष्ट्रभाषाएँ परिषद, संस्करण (2000)

8) कालेलकर आचार्य डॉ. काका ,भारतीय काव्य सिद्धांत ,नागेंद्र लोकभारती प्रकाशन,प्रथम संस्करण

English Books:-

1) Petievich Carla, Assembly of Rivals (Delhi Lucknow And The Urdu Ghazal), Manohar Publications, New Delhi First ed. 1992

2) Kazimi Muhammad Reza, Culture and Identity Selected English Writings of Faiz, Oxford University, Press - 2005

Websites:-

1. https://www.indianholiday.com/gujarat/arts-and-crafts/sugam-sangeet.html
2. https://hi.m.wikipedia.org/wiki/सुगम_संगीत
3. https://en.m.wikipedia.org/wiki/Ghazal
4. https://www.mukherjee.net.in/history-of-ghazal/
5. https://en.m.wikipedia.org/wiki/Geet_(song
6. https://en.m.wikipedia.org/wiki/Nazm

पत्रिकाएं:-

1) सम्मेलन पत्रिका, लोक संस्कृति